IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शोध शीर्षक:

गांधार और मथुरा कला में बौद्‌ध मूर्तिकला का तुलनात्मक अध्ययन

मोन्टा राम माली

सहायक आचार्य, कला विभाग

श्री धनराजजी श्री चंदजी बदामिया कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, वरकाणा

शोध सारांश:

प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति में बौद्‌ध मूर्तिकला का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह धर्म और समाज के दार्शनिक आदर्शों को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। बौद्‌ध धर्म के प्रसार के साथ, इसकी मूर्तिकला ने विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय प्रभावों और शैलियों को आत्मसात कर एक विशिष्ट पहचान बनाई। गांधार और मथुरा इस कला के दो प्रमुख केंद्र थे, जिन्होंने बौद्‌ध मूर्तिकला को अलग-अलग शैलीगत विशेषताएँ दीं।

गांधार कला मुख्य रूप से आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान के क्षेत्रों में विकसित हुई, जहाँ ग्रीक-रोमन, ईरानी और भारतीय संस्कृतियों का संगम हुआ। यह कला ग्रीक-रोमन प्रभाव के कारण अपनी यथार्थवादी शैली, सूक्ष्म विवरण और सजीवता के लिए जानी जाती है। बुद्‌ध की मूर्तियों में वस्त्रों की सिलवटें, घुँघराले बाल और चेहरे पर गंभीरता गांधार कला की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

दूसरी ओर, मथुरा कला भारत के उत्तर में स्थित मथुरा क्षेत्र में विकसित हुई। यह कला पूरी तरह भारतीय शैली और परंपराओं से प्रेरित थी। मथुरा मूर्तियों में आदर्शवाद, आध्यात्मिकता और सरलता की प्रधानता है। यहाँ की मूर्तियों में वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाए गए हैं और चेहरे पर शांति तथा करुणा का भाव प्रकट होता है।

गांधार और मथुरा की मूर्तिकला न केवल उनकी भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि दोनों ने बौद्ध धर्म के आदर्शों को कैसे अपनी-अपनी शैली में अभिव्यक्त किया। इनका तुलनात्मक अध्ययन भारतीय कला की विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करता है।

संकेताक्षरः भौगोलिक प्रभाव, शैलीगत विशेषताएँ: बुद्ध की प्रस्तुति, सामग्री का उपयोग, सांस्कृतिक समृद्धि।

1. गांधार और मथुरा कला का उद्भव

गांधार कला का उद्भ

गांधार कला का विकास लगभग 1 शताब्दी ईसा पूर्व से 5वीं शताब्दी ईस्वी के बीच हुआ। इसका केंद्र मुख्य रूप से आधुनिक पाकिस्तान और अफगानिस्तान का क्षेत्र था, जो उस समय विभिन्न संस्कृतियों के मेल का स्थान था। यह कला ग्रीक, रोमन, ईरानी और भारतीय प्रभावों का अनूठा संगम है, जो इसकी विशिष्ट शैली को परिभाषित करता है। गांधार कला का उत्कर्ष कुषाण साम्राज्य के शासनकाल में हुआ और यह महायान बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ व्यापक रूप से फैल गई।

गांधार कला ने बौद्ध धर्म के धार्मिक आदर्शों को मूर्त रूप दिया, लेकिन इसकी सबसे बड़ी विशेषता ग्रीक-रोमन शैली का प्रभाव है। मूर्तियों में वस्त्रों की सिलवटों, घुँघराले बालों और यथार्थवादी चेहरे की बारीकियों को बड़े कौशल के साथ उकेरा गया। बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों में दैवीय और शासकीय गुणों को प्रमुखता दी गई। इस शैली ने बौद्ध धर्म के संदेश को केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे मध्य एशिया और पूर्वी एशिया तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई।

गांधार कला ने न केवल बौद्ध मूर्तिकला को नई दिशा दी, बल्कि यह सांस्कृतिक समन्वय और कलात्मक उत्कृष्टता का अद्वितीय उदाहरण भी है।

मथुरा कला का उद्भव

मथुरा कला का विकास भारतीय उपमहाद्वीप के मथुरा क्षेत्र में हुआ, जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश में स्थित है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है। मथुरा कला की शुरुआत मौर्य और शुंग काल (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) के दौरान हुई, लेकिन इसका वास्तविक उत्कर्ष गुप्त काल (4-6वीं शताब्दी ईस्वी) में देखा गया। यह कला पूरी तरह से भारतीय शैली और धार्मिक परंपराओं पर आधारित थी, जो इसे विशिष्ट बनाती है।

मथुरा कला का मुख्य उद्देश्य धार्मिक प्रतीकों और मूर्तियों को गढ़कर विभिन्न धर्मों के आदर्शों को अभिव्यक्त करना था। यह न केवल बौद्ध धर्म बल्कि जैन धर्म और हिंदू धर्म के देवताओं, तीर्थंकरों और प्रतीकों के निर्माण में भी योगदान देती थी। बौद्ध मूर्तियों में ध्यान मुद्रा और धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा प्रमुख थीं, जबकि जैन तीर्थंकरों को ध्यानस्थ अवस्था में दर्शाया गया। हिंदू धर्म में विष्णु, शिव और देवी-देवताओं की मूर्तियों का भी निर्माण हुआ।

मथुरा कला का स्वरूप पूरी तरह से भारतीय था, जो इसकी तकनीक और प्रतीकों में झलकता है। मूर्तियों में वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाए जाते थे और इनमें अलंकरण कम होता था। चेहरों पर करुणा, शांति और आध्यात्मिकता का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मथुरा मूर्तिकला में लाल बलुआ पत्थर का उपयोग होता था, जो मथुरा क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था।

मथुरा कला न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्त करती है, बल्कि यह भारतीय मूर्तिकला की एक स्वतंत्र और स्वदेशी शैली के रूप में भी जानी जाती है। इसका प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ दक्षिण एशिया के अन्य क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है।

2. शैलीगत विशेषताएँ

गांधार कला

गांधार कला अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण और ग्रीक-रोमन प्रभाव के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली का विकास प्राचीन गांधार क्षेत्र में हुआ, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों का संगम हुआ। गांधार मूर्तिकला का प्रमुख उद्देश्य बौद्ध धर्म के आदर्शों और धार्मिक भावनाओं को मूर्त रूप देना था। इसके बावजूद, इसकी शैली में ग्रीक और रोमन मूर्तिकला के सौंदर्यशास्त्र की स्पष्ट छाप है।

चेहरे के भाव:

गांधार मूर्तियों में चेहरे के भाव यथार्थवादी और गंभीर होते हैं। बुद्ध की मूर्तियों में ध्यान मुद्रा के भाव और आत्मिक संतुलन को गहराई से दर्शाया गया है। चेहरे पर गंभीरता, स्थिरता और दिव्यता का भाव प्रमुख होता है। इन भावों के माध्यम से बुद्ध के व्यक्तित्व को एक दिव्य और महिमामंडित रूप में प्रस्तुत किया गया।

वस्त्र:

गांधार मूर्तियों में वस्त्र ग्रीक टोgas और रोमन ट्यूनिक के समान हैं। इन वस्त्रों को सिलवटों और गहरी रेखाओं के साथ उकेरा गया है, जो ग्रीक-रोमन कला की पहचान हैं। ये सिलवटें मूर्ति को सजीव और वास्तविक बनाती हैं। वस्त्रों का यह यथार्थवादी चित्रण गांधार कला की विशिष्ट विशेषता है।

बालों की शैली:

गांधार मूर्तियों में बालों को घुँघराले और व्यवस्थित रूप में दर्शाया गया है। यह शैली ग्रीक मूर्तिकला से प्रेरित है। बालों की जटिलता और विवरण मूर्तियों को आकर्षक और सजीव बनाते हैं। बुद्ध की मूर्तियों में बालों का यह रूप उनके दिव्य व्यक्तित्व को और प्रभावशाली बनाता है।

शारीरिक संरचना:

गांधार मूर्तियों में शरीर की संरचना को यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत किया गया है। शरीर के आकार, मांसपेशियों और प्राकृतिक भावों को अत्यधिक बारीकी से उकेरा गया है। यह ग्रीक-रोमन मूर्तिकला की विशेषताओं का प्रतीक है। बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों में शरीर का यह यथार्थवादी चित्रण उनकी दिव्यता और आध्यात्मिकता को उभारने का प्रयास करता है।

मथुरा कला

मथुरा कला भारतीय आदर्शवाद और धार्मिक परंपराओं पर आधारित थी। यह शैली भारतीय समाज और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई थी और इसका उद्देश्य बौद्ध, जैन और हिंदू धर्म के आदर्शों को प्रस्तुत करना था। मथुरा कला आदर्शवादी दृष्टिकोण अपनाती है, जिसमें आध्यात्मिकता और सौंदर्य को मूर्त रूप में व्यक्त किया गया है।

चेहरे के भाव:

मथुरा की मूर्तियों में चेहरा शांति, करुणा और आनंद से भरा होता है। बुद्ध की मूर्तियों में चेहरे पर आंतरिक संतुलन और आध्यात्मिकता का स्पष्ट प्रदर्शन होता है। यह विशेषता मथुरा कला को भारतीय परंपराओं के करीब लाती है।

वस्त्र:

मथुरा की मूर्तियों में वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाए गए हैं। इन वस्त्रों को सीमित रेखाओं और साधारण तकनीकों से गढ़ा गया है। वस्त्रों का यह साधारण चित्रण भारतीय कला की सरलता और प्राकृतिकता को दर्शाता है। मथुरा कला में वस्त्रों का प्रमुख उद्देश्य शरीर की आंतरिक सुंदरता को उभारना था।

बालों की शैली:

मथुरा कला में बालों को सरल और सीधे रूप में दर्शाया गया है। यह शैली भारतीय परंपराओं और आदर्शों का प्रतीक है। मूर्तियों में बालों की सादगी और संयम भारतीय धार्मिक विचारों की गहराई को प्रतिबिंबित करती है।

शारीरिक संरचना:

मथुरा मूर्तियों में शरीर को पूर्ण और परिपूर्ण रूप में दर्शाया गया है। यह शरीर के प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक आदर्शों का प्रतीक है। मूर्तियों की संरचना में मानव शरीर के आदर्श रूप को उभारने का प्रयास किया गया है, जो भारतीय कला के विशिष्ट आदर्शवाद को दर्शाता है।

तुलनात्मक विश्लेषण

गांधार और मथुरा कला की शैलीगत विशेषताएँ उनकी अलग-अलग सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाती हैं।

- **गांधार कला ग्रीक-रोमन यथार्थवाद और जटिलता पर आधारित थी, जबकि मथुरा कला भारतीय आदर्शवाद और आध्यात्मिकता का प्रतीक थी।**
- **वस्त्रों के चित्रण में गांधार कला यथार्थवादी और सिलवटों के विस्तृत विवरण के लिए प्रसिद्ध है, जबकि मथुरा कला में वस्त्रों को सरल और शरीर से चिपका हुआ दिखाया गया।**
- **बालों की शैली में गांधार कला में घुँघराले और जटिल विवरण हैं, जबकि मथुरा कला में बालों की सादगी और संयम प्रमुख है।**
- **शारीरिक संरचना में गांधार कला यथार्थवादी थी और शरीर की मांसपेशियों और प्राकृतिक भावों को महत्व देती थी, जबकि मथुरा कला आदर्शवादी थी और शरीर को आध्यात्मिक आदर्शों के अनुरूप प्रस्तुत करती थी।**

इन दोनों शैलियों की विशेषताएँ न केवल उनकी भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि दोनों ने अपने-अपने तरीके से बौद्ध धर्म के आदर्शों को अभिव्यक्त किया।

3. मूर्तियों की सामग्री और निर्माण तकनीक

गांधार कला

गांधार कला के अंतर्गत मूर्तियों के निर्माण में शिस्ट पत्थर का व्यापक रूप से उपयोग किया गया। शिस्ट एक गहरे भूरे या काले रंग का कठोर पत्थर है, जो गांधार क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। इस पत्थर की स्थायित्व और कड़ी संरचना के कारण यह जटिल और सूक्ष्म विवरणों को उकेरने के लिए आदर्श सामग्री मानी जाती थी। गांधार मूर्तियों की यथार्थवादी शैली को प्रदर्शित करने में शिस्ट पत्थर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिस्ट पत्थर की विशेषताएँ

- जटिलता और सूक्ष्मता: शिस्ट पत्थर की संरचना ने कलाकारों को वस्त्रों की सिलवटें, चेहरे के भाव और बालों के जटिल विवरण को उभारने का अवसर दिया। यह पत्थर ग्रीक-रोमन प्रभाव वाले मूर्तिकला के यथार्थवादी लक्षणों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त था।

- टिकाऊपन: शिस्ट पत्थर अपनी कठोरता और टिकाऊपन के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग गांधार मूर्तियों की दीर्घकालिकता सुनिश्चित करता था।

- प्राकृतिक रंग: शिस्ट का गहरा भूरा और काला रंग मूर्तियों को एक प्रभावशाली और गहन लुक प्रदान करता था, जिससे बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियाँ अधिक सजीव प्रतीत होती थीं।

निर्माण तकनीक

गांधार मूर्तिकारों ने पत्थर को तराशने के लिए धातु के औजारों का उपयोग किया। कलाकारों की कुशलता ने पत्थर की कठोरता को चुनौती देते हुए अत्यधिक जटिल और यथार्थवादी मूर्तियाँ बनाई। पत्थर की सतह को चिकना करने के लिए रगड़ने और पॉलिश करने की तकनीक अपनाई जाती थी। मूर्तियों को अधिक सजीव और भव्य बनाने के लिए उनकी सतह पर सूक्ष्म विवरण और अलंकरण जोड़े जाते थे।

संदर्भ और उपलब्धता

शिस्ट पत्थर गांधार क्षेत्र में आसानी से उपलब्ध था। स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग गांधार कला की विशिष्टता को दर्शाता है। यह सामग्री न केवल मूर्तिकला की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करती थी, बल्कि इसे ग्रीक-रोमन मूर्तिकला के प्रभाव से अलग भी बनाती थी।

मथुरा कला

मथुरा कला में मूर्तियों के निर्माण के लिए लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया। यह पत्थर मथुरा क्षेत्र में स्थानीय रूप से उपलब्ध था और अपनी चमकदार लाल या भूरे रंग की विशेषता के लिए प्रसिद्ध था। मथुरा कला भारतीय परंपराओं और आदर्शों पर आधारित थी, और लाल बलुआ पत्थर का उपयोग इस कला की सौंदर्यशास्त्रीय विशेषताओं को उभारने में सहायक था।

लाल बलुआ पत्थर की विशेषताएँ

- स्थानीय उपलब्धता: लाल बलुआ पत्थर मथुरा क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में पाया जाता था, जिससे इस सामग्री का उपयोग आर्थिक और व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त था।
- चमक और सौंदर्य: लाल बलुआ पत्थर की चमक और चिकनापन मूर्तियों को आकर्षक और भव्य बनाता था। इसकी सतह पर किया गया अलंकरण मूर्तियों को विशिष्ट रूप देता था।
- भारतीय शैली के अनुरूप: इस पत्थर का लाल और भूरा रंग भारतीय मूर्तिकला की पारंपरिक शैली और आध्यात्मिक भावनाओं को प्रकट करता था।

निर्माण तकनीक

मथुरा कला में लाल बलुआ पत्थर को काटने और तराशने के लिए धातु के औजारों का उपयोग किया जाता था। मूर्तिकार पत्थर की सतह को चिकना और चमकदार बनाने के लिए पॉलिश करते थे। पत्थर की संरचना में सरलता होने के कारण मूर्तियों में सौंदर्य और आध्यात्मिकता को प्रमुखता दी जाती थी। मूर्तियों को अलंकरण और प्रतीकात्मक विवरणों के माध्यम से सजाया जाता था।

मथुरा कला की विशेष शैली

मथुरा कला में मूर्तियों को अधिक आदर्शवादी दृष्टिकोण के साथ बनाया गया। लाल बलुआ पत्थर की प्रकृति ने मूर्तियों में भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने में सहायता की। बुद्ध, तीर्थंकर और हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ इस शैली की प्रमुख कृतियाँ थीं।

तुलनात्मक विश्लेषण

गांधार और मथुरा कला में उपयोग की गई सामग्री और निर्माण तकनीक उनके क्षेत्रीय प्रभावों और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को दर्शाती हैं।

- **सामग्री:** गांधार कला में शिस्ट पत्थर का उपयोग किया गया, जो गहरे रंग और जटिल विवरणों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि मथुरा कला में स्थानीय लाल बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया, जो चमक और भव्यता को दर्शाता है।

- **शैली:** गांधार मूर्तियाँ ग्रीक-रोमन यथार्थवाद से प्रभावित थीं, जबकि मथुरा मूर्तियाँ भारतीय आदर्शवाद और आध्यात्मिकता पर आधारित थीं।

- **निर्माण तकनीक:** गांधार मूर्तियों में जटिल और यथार्थवादी विवरण पर जोर दिया गया, जबकि मथुरा मूर्तियों में सरलता और शांति के भाव प्रमुख थे।

- **प्राकृतिक संसाधन:** दोनों कलाओं ने अपनी-अपनी सामग्री का उपयोग करके अपनी शैलीगत विशेषताओं को उभारा, जो उनकी भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है।

इन दोनों शैलियों का अध्ययन भारतीय मूर्तिकला की विविधता और प्राचीन काल की कलात्मक उत्कृष्टता को समझने का अवसर प्रदान करता है।

4. धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव

गांधार कला

गांधार कला मुख्यतः महायान बौद्ध धर्म से प्रभावित थी। इसमें बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों का निर्माण प्रमुखता से हुआ। बोधिसत्वों को गहनों और अलंकरणों के साथ दर्शाया गया, जो ग्रीक और रोमन प्रभाव को प्रदर्शित करता है। बुद्ध को दिव्य और शासकीय रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसमें उनकी महानता और महिमा को उभारा गया।

मथुरा कला

मथुरा कला में बौद्ध धर्म के साथ-साथ जैन धर्म और हिंदू धर्म का भी प्रभाव था। यहाँ बुद्ध के साथ जैन तीर्थंकरों और हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी पाई जाती हैं। मथुरा कला में बुद्ध को एक साधारण और आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया। यहाँ की मूर्तियों में "अभय मुद्रा" और "ध्यान मुद्रा" जैसी मुद्राएँ प्रमुख हैं।

5. भौगोलिक और ऐतिहासिक संदर्भ

गांधार कला

गांधार कला का विकास प्राचीन समय में आज के पाकिस्तान और अफगानिस्तान के क्षेत्र में हुआ। यह क्षेत्र ऐतिहासिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थान था क्योंकि यह विभिन्न संस्कृतियों के संगम का केंद्र था। यहाँ ग्रीक, रोमन, ईरानी और भारतीय संस्कृतियाँ एक साथ मिलीं, और इस सांस्कृतिक मिश्रण ने गांधार कला की विशिष्टता को जन्म दिया। विशेष रूप से, गांधार कला में ग्रीक-रोमन और भारतीय तत्वों का सम्मिलन दिखाई देता है।

गांधार क्षेत्र पर कई साम्राज्य जैसे मौर्य, शुंग, कुषाण, और गुप्तों का प्रभाव था, और इन साम्राज्यों के दौरान बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। कुषाण साम्राज्य के तहत गांधार कला का विकास हुआ और इसने बौद्ध धर्म के महायान पंथ को अपनी मूर्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस कला का एक प्रमुख उद्देश्य बौद्ध धर्म के धार्मिक और दार्शनिक विचारों को चित्रित करना था, जिसमें ग्रीक-रोमन कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है।

गांधार कला की भौगोलिक स्थिति ने इसे एक अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया, जिससे यह कला मध्य एशिया और पूर्वी एशिया तक फैली। इसके साथ ही, यहां के व्यापारिक मार्गों ने भी बौद्ध धर्म के प्रसार में मदद की, और इस कला के प्रभाव से अन्य क्षेत्रों में भी बौद्ध धार्मिक मूर्तियों का निर्माण हुआ।

मथुरा कला

मथुरा कला का उद्भव उत्तर भारत के मथुरा क्षेत्र में हुआ, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपराओं का केंद्र था। मथुरा का ऐतिहासिक महत्व भारतीय धर्म और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत गहरा था। मथुरा कला भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं पर आधारित थी, और इसका उद्देश्य बौद्ध धर्म, जैन धर्म, और हिंदू धर्म की धार्मिक मूर्तियों और प्रतीकों को अभिव्यक्त करना था।

मथुरा क्षेत्र में कला का विकास मौर्य काल से हुआ, लेकिन इसका वास्तविक उत्कर्ष गुप्त काल में हुआ। इस क्षेत्र में भारतीय परंपराओं और धर्मों का गहरा प्रभाव था, और मथुरा कला ने भारतीय आदर्शवाद और आध्यात्मिकता को मूर्त रूप में प्रस्तुत किया। मथुरा की कला में भारतीय धर्मों के विभिन्न प्रतीकों और धार्मिक चित्रणों की प्रमुखता थी।

मथुरा कला ने भारतीय मूर्तिकला को एक नया आयाम दिया। यहां की मूर्तियाँ अपने आदर्शवादी दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हैं, जहां मूर्तिकारों ने भगवानों और बोधिसत्वों को भारतीय धार्मिक संदर्भ में चित्रित किया। इस कला में भारतीय धर्मों के धार्मिक विचारों को आदर्श रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया था।

6. समानताएँ

गांधार और मथुरा कला में कुछ समानताएँ भी हैं जो इन दोनों शैलियों को जोड़ती हैं।

- धार्मिक उद्देश्य: दोनों शैलियाँ बौद्ध धर्म के धार्मिक और दार्शनिक आदर्शों को मूर्त रूप देने में समान हैं। दोनों में धर्म और अध्यात्म की गहरी अभिव्यक्ति है।
- प्रमुख मुद्राएँ: "ध्यान मुद्रा", "अभय मुद्रा" और "धर्मचक्र प्रवर्तन" जैसी मुद्राएँ दोनों कलाओं में समान रूप से देखी जाती हैं। यह मुद्राएँ बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण आदर्शों को दर्शाती हैं।
- मूर्ति निर्माण: दोनों शैलियाँ मुख्य रूप से बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्तियों पर केंद्रित थीं। इन मूर्तियों के माध्यम से धार्मिक कथाएँ और आध्यात्मिक शिक्षा को दर्शाया गया।
- धार्मिक कथाएँ: गांधार और मथुरा दोनों ने बौद्ध धर्म की धार्मिक कथाओं और शिक्षाओं को मूर्तियों और चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

7. अंतरों का विस्तृत विश्लेषण

- शैलीगत दृष्टिकोण: गांधार कला में यथार्थवाद और ग्रीक-रोमन प्रभाव प्रमुख थे, जबकि मथुरा कला भारतीय आदर्शवाद और धार्मिक प्रतीकों को महत्व देती थी। गांधार कला ने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को यथार्थवादी रूप में दर्शाया, जबकि मथुरा कला ने आदर्श रूप में आध्यात्मिकता और सौंदर्य को व्यक्त किया।
- सामग्री का उपयोग: गांधार कला में शिस्ट पत्थर का उपयोग किया गया, जो कठोर और गहरे रंग का था, और मथुरा कला में लाल बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ, जो चमकदार और कोमल था। यह सामग्री उनकी भौगोलिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार चुनी गई थी।

- धार्मिक प्रभाव: गांधार कला मुख्य रूप से महायान बौद्ध धर्म से प्रेरित थी, जिसमें बुद्ध की मूर्तियाँ और बोधिसत्वों की छवियाँ प्रमुख थीं। इसके विपरीत, मथुरा कला ने हीनयान, महायान और अन्य भारतीय धर्मों से प्रभाव लिया था। मथुरा में बौद्ध धर्म के अलावा हिंदू और जैन धर्म की मूर्तियाँ भी बनीं।

- भौगोलिक प्रभाव: गांधार कला में ग्रीक और रोमन संस्कृतियों का मिश्रण देखा जाता है, जबकि मथुरा कला में भारतीय परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं का प्रभाव प्रमुख था। गांधार का भौगोलिक स्थान उस कला को पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभावों के संपर्क में लाता है, जबकि मथुरा में भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रत्यक्ष प्रभाव था।

8. दोनों कलाओं का सांस्कृतिक महत्व

गांधार और मथुरा कला ने भारतीय मूर्तिकला को एक नई दिशा दी और बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गांधार कला ने बौद्ध धर्म को मध्य एशिया और पूर्वी एशिया तक पहुँचाया, जहां इस कला ने बौद्ध धर्म को नई पहचान दी और पश्चिमी प्रभावों को इस धर्म के साथ जोड़ा। गांधार कला के प्रभाव से बौद्ध धर्म का प्रसार और अधिक व्यापक हुआ।

मथुरा कला ने भारतीय समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को गहरे रूप में स्थापित किया। मथुरा की मूर्तियाँ भारतीय धार्मिक विचारों को जीवन्त और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं, और यह भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इन दोनों शैलियों ने बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के आदर्शों को व्यापक रूप से प्रचारित किया।

निष्कर्ष

गांधार और मथुरा कला प्राचीन भारतीय मूर्तिकला की दो महत्वपूर्ण और भिन्न धारा हैं, जिनका विकास विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भों में हुआ। इन दोनों शैलियों में बौद्ध धर्म की मूर्तिकला को प्रस्तुत करने का तरीका पूरी तरह से भिन्न था, जिससे भारतीय कला के विविध पहलुओं का परिचय मिलता है।

गांधार कला, जो वर्तमान पाकिस्तान और अफगानिस्तान के क्षेत्रों में विकसित हुई, ग्रीक और रोमन प्रभावों से प्रभावित थी। इस कला में बुद्ध की मूर्तियों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया था, जिसमें उनके शरीर के प्राकृतिक आकार, चेहरे के भाव, और वस्त्रों की सूक्ष्मता को ध्यान में रखते हुए मूर्तियाँ बनाई गईं। यहाँ तक कि बुद्ध की मूर्तियों में ग्रीक-रोमन शैली के बाल और वस्त्रों के विवरण भी देखे जाते हैं, जो इसे अन्य भारतीय शैलियों से अलग बनाता है।

वहीं, मथुरा कला, जो उत्तर भारत के मथुरा क्षेत्र में विकसित हुई, भारतीय धार्मिक परंपराओं और आदर्शवाद पर आधारित थी। इस कला में मूर्तियों को अधिक आध्यात्मिक और आदर्श रूप में चित्रित किया गया, जहाँ शारीरिक सुंदरता से अधिक ध्यान बौद्ध धर्म के दार्शनिक और धार्मिक संदेश पर था। मथुरा की मूर्तियाँ शांति, करुणा और आध्यात्मिकता का प्रतीक होती थीं, और इनकी संरचना अधिक सरल और भारतीय धार्मिक प्रतीकों से जुड़ी होती थी।

इन दोनों शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय कला और संस्कृति की समृद्ध विविधता को उजागर करता है, और यह दर्शाता है कि किस प्रकार विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों के माध्यम से बौद्ध धर्म और मानवता के विचारों को मूर्त रूप दिया गया।

संदर्भः

1. **शर्मा, आर० सी० - मथुरा संग्रहालय परिचय, पृ० 5, प्रकाशक - मथुरा संग्रहालय, मथुरा, 1972.**
2. **डॉ० ईश्वरी प्रसाद - प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म एवं दर्शन, पृ० 230, प्रकाशक - मीनू पब्लिकेशन्स, 20 म्योर रोड, इलाहाबाद, 1980.**
3. **अग्रवाल, वी०एस० - भारतीय कला, पृ० 7, प्रकाशक - देवकुमार अग्रवाल, पृथिवी प्रकाशन, बी-1/54, अमेठी कोठी, नगवा, वाराणसी-221005.**
4. **अग्रवाल, वी०एस० - भारतीय कला, पृ० 7, प्रकाशक - देवकुमार अग्रवाल, पृथिवी प्रकाशन, बी-1/54, अमेठी कोठी, नगवा, वाराणसी-221005.**
5. **लूनिया, बी० एन० - भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पृ० 162, प्रकाशक - लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा - 3.**
6. **शर्मा, आर० सी० - मथुरा संग्रहालय परिचय, पृ० 5, प्रकाशक - मथुरा संग्रहालय, मथुरा, 1972.**
7. **डॉ० ईश्वरी प्रसाद - प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म एवं दर्शन, पृ० 230, प्रकाशक - मीनू पब्लिकेशन्स, 20 म्योर रोड, इलाहाबाद, 1980.**